ठीहा छत्तीसगढ़
आवाज़ हमर छत्तीसगढ़ के
|01
वर्ष-01 | अंक-01 | पाक्षिक | 01 से 15 अगस्त 2026 | मूल्य : 20 | पृष्ठ- 12

हरेली तिहार: मुख्यमंत्री निवास में उतरा गांव का रंग

सीएम बोले- हरेली प्रकृति, पशुधन और किसानों के प्रति कृतज्ञता का तिहार है

छत्तीसगढ़ का पहला लोक पर्व हरेली बुधवार को नवा रायपुर स्थित मुख्यमंत्री निवास में धूमधाम से मनाया गया। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय पारंपरिक छत्तीसगढ़ी वेशभूषा में विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह के साथ पिंक ऑटो से कार्यक्रम स्थल पहुंचे। कार्यक्रम की शुरुआत गौरी-गणेश और नवग्रह पूजन से हुई, जिसके बाद मुख्यमंत्री ने शिवलिंग का विधि-विधान से अभिषेक किया।पूजा-पाठ के दौरान मुख्यमंत्री ने नांगर, रापा, कुदाल और फावड़ा सहित खेती में उपयोग होने वाले औजारों की पूजा-अर्चना की। इसके बाद वे मुख्यमंत्री निवास परिसर स्थित गौशाला पहुंचे, जहां उन्होंने गौमाता की आरती की और गाय-बछड़े को हरा चारा, चना-गुड़ व पारंपरिक लोंदी खिलाई। मुख्यमंत्री साय ने कहा कि हरेली छत्तीसगढ़ की कृषि परंपरा, प्रकृति और ग्रामीण जीवन के बीच के रिश्ते का पर्व है। उन्होंने कहा कि किसान अपने खेतों, औजारों और पशुधन के प्रति सम्मान व्यक्त करने के लिए यह पर्व मनाते हैं। इस अवसर पर उन्होंने प्रदेशवासियों की सुख-समृद्धि और अच्छी फसल की कामना की।

पौधरोपण और कृषि योजनाओं का जिक्र

कार्यक्रम में मुख्यमंत्री और विधानसभा अध्यक्ष ने परिसर में पारिजात का पौधा लगाया।

मंत्रियों और अन्य पदाधिकारियों ने भी पौधरोपण किया। मुख्यमंत्री ने अपने संबोधन में सहकारी कृषि ऋण को शून्य प्रतिशत ब्याज दर तक लाए जाने और राज्य सरकार द्वारा 3,100 रुपए प्रति क्विंटल की दर से धान खरीदी का उल्लेख किया।

कार्यक्रम में किसान इंद्र कुमार वर्मा को हार्वेस्टर सब्सिडी के तहत 16 लाख रुपए का चेक सौंपा गया। ड्रोन दीदी चंद्रकली वर्मा से मुख्यमंत्री ने संवाद किया, जिन्होंने बताया कि वे ड्रोन से खेतों में छिड़काव कर प्रति एकड़ 300 रुपए कमाती हैं और अब तक ढाई हजार एकड़ से अधिक क्षेत्र में काम कर चुकी हैं।

कलाकारों ने किया प्रदर्शन

कार्यक्रम स्थल को पारंपरिक छत्तीसगढ़ी रंग-रूप में सजाया गया था, जहां ग्रामीण परिधान पहने अतिथि, कलाकार और आमजन लोक संस्कृति में रमे नजर आए। हरेली उत्सव के दौरान मुख्यमंत्री निवास में परम्परागत और आधुनिक कृषि यंत्रों का प्रदर्शन किया गया। मुख्यमंत्री ने प्रदर्शनी स्थल का भ्रमण कर विभिन्न पारंपरिक यंत्रों और वस्तुओं का अवलोकन किया।

प्रदर्शनी में गेड़ी, बिल्लस, गोटी, बाटी जैसे पारंपरिक खेल और कृषि उपकरण प्रदर्शित किए गए। कृषि विभाग द्वारा आयोजित आधुनिक कृषि यंत्रों की प्रदर्शनी में नांगर, कुदाली, फावड़ा, रोटावेटर, बीज ड्रिल, पावर टिलर और स्प्रेयर जैसे यंत्र शामिल थे।

मांदर और ढोलक की थाप पर लोक कलाकारों ने छत्तीसगढ़ी गीत-नृत्य प्रस्तुत किए। ठेठरी, खुरमी, बड़ा सहित पारंपरिक व्यंजनों के स्टॉल भी कार्यक्रम में लगाए गए थे।

विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह ने कहा कि हरेली छत्तीसगढ़ की कृषि परंपरा और संस्कृति से जुड़ा पर्व है और किसानों को धान का उचित मूल्य मिलने से गांव मजबूत हो रहे हैं। कृषि मंत्री रामविचार नेताम ने कहा कि यह पर्व खेती-किसानी और प्रकृति के प्रति आस्था का प्रतीक है।

कार्यक्रम में महिला एवं बाल विकास मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े, राजस्व मंत्री टंक राम वर्मा, स्कूल शिक्षा मंत्री गजेंद्र यादव, कौशल विकास मंत्री गुरु खुशवंत साहेब सहित विधायकगण, निगम-मंडल के पदाधिकारी, विभिन्न जिलों से आए किसान और बड़ी संख्या में नागरिक उपस्थित रहे।

गढ़ी पकवानों का भी आयोजन किया गया था।

हरेली पर उप मुख्यमंत्री अरुण साव ने की गौमाता व कृषि औजारों की पूजा मंत्री टंकराम वर्मा के नवीन आवास में हुआ गृह प्रवेश

रायपुर। छत्तीसगढ़ का पहला लोकपर्व हरेली आज प्रदेशभर में पारंपरिक उत्साह और उल्लास के साथ मनाया गया। उप मुख्यमंत्री श्री अरुण साव ने नवा रायपुर स्थित अपने शासकीय निवास में गौमाता एवं कृषि औजारों नांगर, गैती, कुदारी आदि की विधिवत पूजा-अर्चना की। उन्होंने घर के प्रवेश द्वार पर नीम की डाली लगाकर प्रदेश में अच्छी बारिश, भरपूर फसल, खुशहाली और समृद्धि की कामना की।

इसी अवसर पर मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय नवा रायपुर में राजस्व मंत्री श्री टंकराम वर्मा के नवीन शासकीय आवास के गृह प्रवेश समारोह एवं हरेली उत्सव में शामिल हुए। मुख्यमंत्री ने श्री वर्मा एवं उनके परिजनों को गृह प्रवेश और हरेली की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि हरेली कृषि संस्कृति, प्रकृति और ग्रामीण जीवन से गहराई से जुड़ा पर्व है तथा किसान छत्तीसगढ़ की प्रगति की धुरी हैं। इस अवसर पर विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह सहित अनेक जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे।

पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के बंगले पर भी मना हरेली, परिवार संग की पूजा-अर्चना

पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के बंगले पर भी हरेली तिहार धूमधाम से मनाया गया। उन्होंने पत्नी और परिवार के साथ कृषि औजारों की पूजा-अर्चना कर अच्छी फसल की कामना की और गौमाता की आरती कर उन्हें लोंदी खिलाई। बंगले को नीम के पत्तों और गेंदे के फूलों से सजाया गया था। कार्यक्रम में कांग्रेस के कई वरिष्ठ नेता, पूर्व मंत्री, विधायक और कार्यकर्ता शामिल हुए।

इस दौरान लोक कलाकारों ने छत्तीसगढ़ी गीतों पर पारंपरिक नृत्य प्रस्तुत किए। पूर्व मुख्यमंत्री बघेल खुद गेड़ी पर चढ़े और हाथ पर लट्टू भी नचाया। कार्यक्रम में चिल्ला और फरा सहित छत्तीसगढ़ी पकवानों का भी आयोजन किया गया था।

छत्तीसगढ़ का पहला तिहार हरेली

छत्तीसगढ़ का पहला लोक पारंपरिक पर्व हरेली माना जाता है। इसे लेकर पूरे प्रदेश में विशेष तैयारियां की जाती हैं। हरेली तिहार हर साल सावन महीने की अमावस्या तिथि को मनाया जाता है। मान्यता है कि इस समय तक किसान धान की रोपाई जैसे कृषि कार्य पूरे कर लेते हैं। हरेली छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक और कृषि परंपरा से जुड़ा प्रमुख लोकपर्व है।

हरेली म गेड़ी के महत्व

हरेली तिहार पर किसान और ग्रामीण अपने पशुधन की पूजा करते हैं। किसान इस दिन अपने उपयोग में आने वाले कृषि औजार जैसे नांगर(हल), रापा(फावड़ा), जुड़ा-दतारी, कुदारी, बसला और टंगिया को साफ करके धोते हैं। इसके बाद घर के आंगन में इनकी पूजा की जाती है। कृषि औजारों को नारियल और गुड़ के चीले का भोग लगाया जाता है। गांवों में ठाकुरदेव की भी पूजा की जाती है। हरेली तिहार में किसान और पशुपालक अपने पशुधन को गौठान में ले जाकर गेहूं के आटे से बनी लोंदी खिलाते हैं। इसके पीछे पशुओं के स्वस्थ और निरोग रहने की मान्यता जुड़ी हुई है। वापस लौटते समय यादव समाज के लोग जंगल से लाए गए कंदमूल किसानों को देते हैं। इसे गांव के लोग प्रसाद के रूप में खाते हैं। मान्यता है कि जंगली कंदमूल खाने से शरीर स्वस्थ रहता है।

पशुधन की पूजा और विशेष आयोजन

प्रदेश के किसान हरेली तिहार को धूमधाम से मनाते हैं। इस अवसर पर बैलों को सजाया जाता है और पशुधन की पूजा की जाती है। किसानों के जीवन में पशुओं का विशेष महत्व होने के कारण उनके सम्मान में कई तरह के आयोजन किए जाते हैं। इन आयोजनों में छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति और ग्रामीण परंपराओं की झलक देखने को मिलती है।

हरेली में गेड़ी का महत्व

तिहार से कई दिन पहले ही घरों में गेड़ी तैयार होने लगती है। हरेली के दिन महिलाएं घरों में विभिन्न छत्तीसगढ़िया व्यंजन बनाती हैं। इनमें गुरहा चीला, बरा, सोहारी और गुलगुला भजिया प्रमुख हैं। हरेली के दिन बच्चे और बड़े लकड़ी से बनी गेड़ी पर चढ़कर चलते हैं। गांव की गलियों में गेड़ी चलाने की परंपरा हरेली तिहार का प्रमुख आकर्षण है। बच्चों और युवाओं के लिए यह पर्व विशेष उत्साह और आनंद लेकर आता है।

नीम की पत्तियां लगाने की परंपरा

हरेली की शाम यादव समाज के लोग घरों के मुख्य दरवाजे पर नीम की डाल लटकाते हैं। इसके पीछे नकारात्मक ऊर्जा को दूर रखने और घर को कीटाणुओं तथा बीमारियों से बचाने की पारंपरिक मान्यता जुड़ी हुई है। हरेली को छत्तीसगढ़ का पहला त्योहार भी कहा जाता है। मान्यता है कि इसी पर्व के साथ प्रदेश के पारंपरिक त्योहारों की शुरुआत होती है। इसलिए ग्रामीण अंचलों में हरेली का विशेष सांस्कृतिक महत्व है।

छत्तीसगढ़ का खूबसूरत दल्हा पहाड़: आस्था, रोमांच और प्रकृति का अद्भुत संगम

राकेश निर्मलकर
संवाददाता, रायपुर

वैसे तो छत्तीसगढ़ में घूमने लायक बहुत सी रोमांचकजगह है। इनमें जांजगीर-चांपा जिले का दल्हा पहाड़ आस्था और रोमांच का एक अनूठा संगम प्रस्तुत करता है। जिला मुख्यालय से लगभग 30 किलोमीटर दूर अकलतरा तहसील के दल्हापोड़ी गांव में स्थित यह पहाड़ अपनी प्राकृतिक सुंदरता और धार्मिक मान्यताओं के लिए दूर-दूर तक प्रसिद्ध है। लगभग 700 मीटर ऊंचे इस पहाड़ की चोटी से चारों ओर का विहंगम दृश्य देखने और प्रकृति के इस खूबसूरत नजारे का आनंद लेने के लिए सैलानी यहां खिंचे चले आते हैं।

आस्था का केंद्र और चमत्कारी सूर्यकुंड

दल्हा पहाड़ पर मुख्य रूप से नागपंचमी के अवसर पर विशाल मेले का आयोजन होता है, इस बार नागपंचमी 17 अगस्त, सोमवार को पड़ रही है। यहां स्थित मुनि का आश्रम और 'सूर्यकुंड' श्रद्धालुओं के बीच विशेष आकर्षण का केंद्र हैं। मान्यता है कि सूर्यकुंड का जल बारहों महीने अमृत के समान रहता है। स्थानीय लोगों और श्रद्धालुओं का अटूट विश्वास है कि नागपंचमी के दिन इस कुंड का जल पीने से स्वास्थ्य उत्तम रहता है और किसी भी प्रकार की बीमारी से मुक्ति मिल जाती है।

ट्रैकिंग के शौकीनों के लिए बेहद रोमांचित करने वाला सफर

इस पहाड़ की चोटी तक पहुंचने का सफर अपने आप में एक बड़ा रोमांच है। यदि आप यहां आ रहे हैं, तो आपको नैसर्गिक चट्टानों को पार करते हुए आगे बढ़ना पड़ेगा, जो ट्रैकिंग के शौकीनों के लिए बेहद रोमांचित करने वाला अनुभव है। जंगल के रास्तों, कंटीले पौधों और पथरीली चट्टानों को पार करके ही शिखर तक लंबा सफर तय करना होता है, क्योंकि यहां न तो कोई सीढ़ियां हैं और न ही चढ़ाई के लिए कोई पक्का रास्ता। पहाड़ के चारों ओर कोटगढ़, पचरी, पंडरिया और पोड़ी गांव बसे हुए हैं। दिलचस्प बात यह है कि इस जंगली रास्ते में सांप भी रहते हैं, लेकिन ट्रैकिंग के शौकीन और श्रद्धालु आम दिनों में भी इस यात्रा का मोह नहीं छोड़ते।

शिखर का सुन्दर दृश्य और मानसून का जादू

जब दुर्गम रास्तों से होकर आप पहाड़ की चोटी पर पहुंचते हैं, तो वहां पहुंचने के बाद चारों तरफ दूर-दूर का खूबसूरत दृश्य देखकर सारी थकान मानो मिट सी जाती है। मानसून के समय जब बादल पहाड़ से टकराते हैं, तो वह पल लोगों के लिए किसी फिल्म के सीन से कम नहीं होता। प्रकृति का यह अद्भुत रूप हर किसी को मंत्रमुग्ध कर देता है।

यहां आने वालों के लिए विशेष सलाह

यह जगह जितनी सुंदर है, उतनी ही खतरनाक भी है क्योंकि थोड़ी सी चूक जीवन पर भारी पड़ सकती है। पहाड़ की दुर्गम चढ़ाई को देखते हुए अपनी सुरक्षा का विशेष ध्यान रखना जरूरी हो जाता है।

पहनावा और जूते: ट्रैकिंग के दौरान टाइट कपड़े न पहनें, आरामदायक कपड़े चुनें। हमेशा जूता पहनकर आएं जिससे चढ़ने में आसानी होगी। चप्पल बिल्कुल न पहनें क्योंकि रास्तों में बेहद ढलान है और इससे फिसलने या चोट लगने की दिक्कत हो सकती है।

पानी साथ रखें: ऊंचाई पर चढ़ते वक्त प्यास बहुत लगती है, इसलिए अपने साथ भरपूर पानी रखें। यदि दो लोग जा रहे हैं, तो कम से कम दो लीटर पानी अपने साथ अवश्य रखें।

सामान कम रखें: पहाड़ पर चढ़ते समय अपने साथ ज्यादा सामान न रखें। भारी सामान के साथ इतनी ऊंचाई चढ़ने में आपको ज्यादा थकान लग सकती है और सफर मुश्किल हो सकता है।

कैसे पहुंचें दल्हा पहाड़?

दल्हा पहाड़ पहुंचने के लिए यातायात के अच्छे साधन उपलब्ध हैं।

ट्रेन द्वारा: सबसे नजदीकी रेलवे स्टेशन अकलतरा है। यहां से बलौदा मार्ग पर मात्र 7 किलोमीटर की दूरी तय करके दल्हापोड़ी गांव स्थित पहाड़ तक पहुंचा जा सकता है।

सड़क मार्ग द्वारा: सड़क मार्ग से आप जांजगीर-चांपा जिला मुख्यालय से अकलतरा होते हुए (लगभग 25 किलोमीटर की दूरी) यहां आ सकते हैं। इसके अलावा, आप बिलासपुर से अकलतरा होकर भी दल्हा पहाड़ आसानी से पहुंच सकते हैं।

सूर्यकुंड

नागपंचमी का विशाल मेला और चमत्कारी कुंड

दल्हा पहाड़ पर आस्था का सबसे बड़ा सैलाब नागपंचमी के दिन उमड़ता है। इस विशेष अवसर पर यहां एक विशाल मेले का आयोजन होता है, जिसमें शामिल होने के लिए केवल छत्तीसगढ़ से ही नहीं, बल्कि दूसरे राज्यों से भी हजारों की संख्या में श्रद्धालु दूर-दूर से आते हैं। पहाड़ के ठीक नीचे एक प्राचीन ऋषि आश्रम स्थित है, जो लोगों की अगाध श्रद्धा का केंद्र है। इसी आश्रम के पास एक पवित्र सूर्यकुंड मौजूद है। इस कुंड की सबसे बड़ी खासियत यह है कि इसका पानी कभी नहीं सूखता, चाहे कितनी भी भीषण गर्मी क्यों न हो। श्रद्धालुओं का यह अटूट विश्वास है कि नागपंचमी के दिन इस कुंड का पवित्र जल पीने से अद्भुत स्वास्थ्य लाभ होता है और शरीर की हर तरह की बीमारी दूर हो जाती है।

करोड़ों की सड़क सुरक्षा योजना पर लापरवाही! रायपुर की सड़कों से गायब हो रही डिवाइडर रेलिंग हादसों का बढ़ा खतरा

रायपुर। राजधानी रायपुर में सड़क सुरक्षा को मजबूत बनाने के उद्देश्य से करोड़ों रुपये खर्च कर डिवाइडरों के बीच लगाई गई लोहे की रेलिंग अब धीरे-धीरे गायब होती जा रही हैं। कई स्थानों पर रेलिंग टूटी हुई है, जबकि कई जगहों से पूरी तरह से हट चुकी है या चोरी हो गई है। सबसे चिंताजनक बात यह है कि शहर के वीआईपी क्षेत्रों और मंत्रियों के बंगलों के आसपास भी रेलिंग गायब दिखाई दे रही है, जिससे रखरखाव व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े हो रहे हैं।

शहरी सड़क सुरक्षा एवं यातायात सुगमतीकरण योजनाओं के तहत स्थानीय नगर निगम और लोक निर्माण विभाग (PWD) द्वारा इन रेलिंगों की स्थापना की गई थी। इनका मुख्य उद्देश्य सड़क दुर्घटनाओं को कम करना, वाहनों की अनियंत्रित आवाजाही रोकना तथा पैदल यात्रियों को निर्धारित स्थानों से ही सड़क पार करने के लिए प्रेरित करना था। लेकिन समय पर रखरखाव नहीं होने और सुरक्षा व्यवस्था कमजोर पड़ने से करोड़ों रुपये की यह योजना धीरे-धीरे अपनी उपयोगिता खोती नजर आ रही है।

रेलिंग गायब होने के कारण कई स्थानों पर लोग सीधे डिवाइडर पार कर सड़क पार कर रहे हैं, जिससे तेज रफ्तार वाहनों के बीच दुर्घटनाओं की आशंका बढ़ गई है। वहीं, क्षतिग्रस्त डिवाइडर शहर की सुंदरता और यातायात व्यवस्था दोनों को प्रभावित कर रहे हैं। स्थानीय नागरिकों का कहना है कि यदि समय रहते इन रेलिंगों की मरम्मत और पुनर्स्थापना नहीं की गई तो भविष्य में गंभीर सड़क हादसे हो सकते हैं।

शहरवासियों का यह भी कहना है कि जब वीआईपी इलाकों में ही सड़क सुरक्षा संबंधी संरचनाओं का यह हाल है, तो अन्य क्षेत्रों की स्थिति का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। ऐसे में यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि करोड़ों रुपये खर्च कर बनाई गई सड़क सुरक्षा परियोजनाओं की निगरानी और रखरखाव की जिम्मेदारी आखिर किसकी है?

अब नागरिकों की मांग है कि नगर निगम, लोक निर्माण विभाग और संबंधित एजेंसियां संयुक्त रूप से शहरभर का सर्वे कर गायब एवं क्षतिग्रस्त रेलिंगों को तत्काल बदलें, चोरी की घटनाओं की जांच कर जिम्मेदार लोगों के खिलाफ कार्रवाई करें तथा सड़क सुरक्षा व्यवस्था को दोबारा मजबूत बनाएं।

सबसे बड़ा सवाल यही है- जब सड़क सुरक्षा से जुड़ी संरचनाएं ही लापरवाही की भेंट चढ़ रही हैं, तो आखिर जिम्मेदार अधिकारी कब जागेंगे?

छत्तीसगढ़ में AI क्रांति की शुरुआत: मुख्यमंत्री विष्णु देव साय की अध्यक्षता में राज्य आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस मिशन को मिली मंजूरी

रायपुर। छत्तीसगढ़ सरकार ने राज्य को डिजिटल और तकनीकी रूप से सशक्त बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम उठाया है। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में छत्तीसगढ़ राज्य आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) मिशन को मंजूरी प्रदान की गई। इस महत्वाकांक्षी मिशन का उद्देश्य राज्य में सुशासन को और अधिक प्रभावी बनाना, नई तकनीकों को बढ़ावा देना, युवाओं के लिए कौशल विकास के अवसर बढ़ाना तथा डिजिटल अर्थव्यवस्था को नई गति देना है।

सरकार का मानना है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के माध्यम से विभिन्न विभागों की कार्यप्रणाली अधिक पारदर्शी, तेज और नागरिक-केंद्रित बनेगी। इससे सरकारी सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार होगा और आम जनता को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराई जा सकेंगी।

AI मिशन के तहत युवाओं को आधुनिक तकनीकों का प्रशिक्षण देने, स्टार्टअप और नवाचार को प्रोत्साहित करने तथा उद्योगों में नई तकनीकों के उपयोग को बढ़ावा देने पर विशेष जोर दिया जाएगा। इससे रोजगार के नए अवसर सृजित होने के साथ-साथ राज्य की डिजिटल अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिलेगी।

विशेषज्ञों का मानना है कि यह मिशन छत्तीसगढ़ को तकनीकी नवाचार के क्षेत्र में नई पहचान दिलाने के साथ-साथ भविष्य की डिजिटल चुनौतियों के लिए भी तैयार करेगा। सरकार की यह पहल शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, उद्योग और प्रशासन जैसे विभिन्न क्षेत्रों में AI आधारित समाधान विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

राज्य सरकार का लक्ष्य है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग केवल तकनीकी विकास तक सीमित न रहे, बल्कि इसका लाभ आम नागरिकों तक पहुंचे और छत्तीसगढ़ डिजिटल परिवर्तन के नए दौर में अग्रणी राज्यों की श्रेणी में शामिल हो सके।